IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19699093

ISSN : 3048-6971

"समावेशी एवं सतत शिक्षा में डिजिटल उपकरण का महत्व"

डॉ. फराह मेहर
प्रो. मौलाना आजाद विश्वविद्यालय बुझावड़
जोधपुर

रीति परिहार, *शोध कर्त्री*
उमराव बी.एड. कॉलेज, बनाड़ रोड़, जोधपुर
reetiparihar1@gmail.com

समावेशी शिक्षा की अवधारणा – शिक्षा ही एक ऐसा अमोघ अस्त्र है, जिसके द्वारा समाज के प्रत्येक प्राणी को उसका अधिकार मिल सकता है। विद्यालय, महाविद्यालय इस ओर अपने पूर्ण दायित्व का निर्वहन कर सकते हैं। विद्यालय तथा समावेशित शिक्षा के विशेष विद्यालयों द्वारा इस विषमता के कार्य को सम्पन्न किया जा सकता हैं।

समावेशी शिक्षा का अर्थ – समावेशी शिक्षा का आशय सामान्य रूप से उस शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित है, जिसमें सामान्य छात्र एवं अक्षम छात्र एक ही कक्षा में एक–दूसरे को सम्मिलित करके अध्ययन करते हैं। इस व्यवस्था में सभी प्रकार के अक्षम छात्र एक साथ मिलकर सामान्य छात्रों के साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। इससे एक ओर अक्षम छात्रों को अपनी अक्षमता के प्रति हीनभावना का बोध नहीं होता है क्योंकि वे सामान्य छात्रों के साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। वहीं दूसरी ओर सामान्य छात्रों को यह बोध होता है कि उसको अक्षम छात्रों की सहायता करनी चाहिये।

प्रो. एस.के. दुबे के अनुसार ''समावेशी शिक्षा का आशय उस शिक्षा व्यवस्था से है जिसमें सामान्य एवं अक्षम छात्रों को एक साथ शिक्षण प्रदान करते हुए उच्च अधिगम स्तर से सम्बन्धित क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है तथा समुदाय, अभिभावक, शिक्षक एवं प्रशासन का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जाता है।''

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य – समावेशी शिक्षा योजना को वर्तमान समय में व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इसका कारण यह है कि इसमें उन सभी उद्देश्यों को समाहित किया गया है जो विशेष प्रकार के बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक होते हैं। समावेशी शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है –

(1) समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अक्षमता से युक्त बालकों के लिए शैक्षिक वातावरण प्रदान करना है ताकि प्रत्येक छात्र अपने अधिगम स्तर को उच्च बना सके।

(2) समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों में निहित विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं का विकास करना है, क्योंकि अनेक अक्षम बालकों में विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं का समावेश पाया जाता है।

(3) इस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली प्रमुख बाधाओं का निराकरण करना है।

(4) समावेशी शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि पाठ्यक्रम के द्वारा सामान्य एवं अक्षमता से ग्रसित बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

(5) इस शिक्षा में छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रयास किये जाते हैं जिससे सरकारी तन्त्र, सामुदायिक तंत्र एवं गैर सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाता हैं।

(6) शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है ताकि अक्षमता से युक्त बालकों को उनके अनुरूप शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकें।

(7) इसमें मूल्यांकन रूप से भी यह ध्यान दिया जाता है कि अक्षम छात्रों की भावनाओं को मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से उनको किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुँचे।

(8) जो व्यक्ति 14 से 21 वर्ष की आयु के हैं तथा किन्हीं कारणों से वह शिक्षा की मुख्य धारा से पृथक हो गए हैं, परन्तु उनमें अनेक प्रतिभाएँ विद्यमान हैं। ऐसे छात्रों को उचित शिक्षा व्यवस्था उपलबध कराना भी समावेशी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।

सतत शिक्षा – वह शिक्षा जो व्यक्ति को जीवन भर सीखते रहने, समय के साथ स्वयं को विकसित करने और समाज व पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता करती है। यह केवल विद्यालय या कॉलेज तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि जीवन के हर चरण में चलने वाली निरन्तर सीखने की प्रक्रिया है।

परिभाषा – ''सतत शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति निरन्तर ज्ञान, कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण को विकसित करता है ताकि वह वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान कर सके।''

सतत शिक्षा के उद्देश्य –

- व्यक्ति में आत्मनिर्भरता विकसित करना।
- रोजगार योग्य कौशल प्रदान करना।
- सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को बढावा देना।
- ज्ञान का निरन्तर अद्यतन।

छम्ब् 2020 में सतत शिक्षा को आजीवन सीखने, डिजिटल शिक्षा, व्यस्क शिक्षा और कौशल विकास से जोड़ा गया है। सतत शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास की कुंजी है। यह शिक्षा को स्थाई, उपयोगी और भविष्य के अनुकूल बनाती है।

समावेशी शिक्षा के लिए डिजिटल उपकरण –

- स्क्रीन रीडर – श्रौं (दृष्टि बाधित विद्यार्थियों के लिए)
- टेक्स्ट–टू–स्पीच – (ळववहसम जमगज जव ेचममबी)
- सबटाइटल और केप्शन टूल – (ल्वन जनइमए ।नजव बंचजपवदए सपअम बंचजपवद)
- डिजिटल ब्रेल डिस्प्ले और की बोर्ड
- लर्निंग मैनेजमेन्ट सिस्टम – (ळववहसम ब्सेंतववउए डवकसम)
- अनुवाद और बहुभाषी टूल (ळववहसम जतंदेसंजम)
- ऑडियो – वीडियो लर्निंग सामग्री – पॉडकास्ट, रिकोर्डेड लेक्चर

सतत शिक्षा के लिए डिजिटल उपकरण –

- ई–लर्निंग प्लेटफोर्म –ूलंउए क्पोीं
- डिजिटल पुस्तकें और ई–लाइब्रेरी – म.च्ंजींसंए छंजपवदंस क्पहपजंस स्पइतंतल
- वीडियो कोन्फ्रेसिंग टूल –ळववहसम डममजए ंववउ
- क्लाउड स्टोरेज – ळववहसम क्तपअमए व्दम क्तपअम
- ऑपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (व्त्) – मुफ्त डिजिटल पाठ्य सामग्री
- मोबाईल लर्निंग एप्स – ठल्श्रन्दैए झींद ।बंकमउल

समावेशी एवं सतत शिक्षा में डिजिटल उपकरणों का महत्व –

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल उपकरण समावेशी तथा सतत शिक्षा को सशक्त बनाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भारत में छम्ब् 2020 के सन्दर्भ में भी डिजिटल साधनों को शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच और निरन्तरता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम माना गया है। इसी कारण से समावेशी शिक्षा में डिजिटल उपकरणों का विशेष महत्व है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य हर बच्चे को उसकी क्षमता, लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, भाषा या दिव्यांगता की परवाह किये बिना समान शिक्षा अवसर प्रदान करना है।

महत्व –

(1) **कहीं भी, कभी भी सीखना –** जैसे मोबाईल, टैबलेट, लैपटॉप आदि के माध्यम से कहीं भी कभी भी सीखने का काम आसानी से किया जा सकता है।

(2) ऑनलाईन प्रशिक्षण, वेबिनार के माध्यम से बिना किसी यात्रा के आसानी से सीखने का काम किया जा सकता है।

(3) **कौशल विकास –** डिजिटल साक्षरता, आईटी कौशल, जीवन कौशल जैसे कई अनेक कौशल को आसानी से सीखा जा सकता है।

(4) **मूल्यांकन एवं फीडबैक –** ऑनलाईन टेस्ट, क्विंज, त्वरित फीडबैक आदि से मूल्यांकन व फिडबैक हाथों हाथ प्राप्त किया जा सकता है साथ ही सीखने की प्रक्रिया पर निरन्तर निगरानी भी रखी जा सकती है।

(5) **समान अवसर की उपलब्धता –** ऑनलाईन के जरिये गाँव–गाँव तक वंचित बच्चों को गुणवतापूर्ण शिक्षा आसानी से पहुँचायी जा सकती है।

(6) **भाषायी विविधता का सम्मान –** बहुभाषी डिजीटल सामग्री से विद्यार्थी कई चीजों को अपनी मातृभाषा में भी कम समय में आसानी से सीख सकता है।

(7) **विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी हेतु सहायक–**स्क्रीन रीडर, टेक्स्ट टू स्पीच, ऑडियो–वीडियो सामग्री दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित एवं अधिगम कठिनाई वाले विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

सतत शिक्षा में डिजिटल उपकरणों का महत्व –

(1) **निरन्तर मूल्यांकन –** मोबाईल, इंटरनेट एवं ई लर्निंग प्लेटफॉर्म से ऑनलाईन क्विज, टेस्ट और त्वरित फीडबैक से सीखने की निरन्तरता बनी रहती है।

(2) **कभी भी, कहीं भी सीखना –** मोबाईल, इन्टरनेट एवं ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म से आजीवन किसी भी जगह, किसी भी समय सीखना आसान हो गया है।

(3) **शिक्षकों का व्यवसायिक विकास –** नवीन तकनीकी के माध्यम से विद्यार्थियों को ही नहीं बल्कि शिक्षकों को भी ऑनलाईन प्रशिक्षण, वेबिनार एवं डव्ळे शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों से जोड़ा जा सकता है, जिससे शिक्षकों का व्यवसायिक विकास होता है।

(4) **कौशल विकास–**निरन्तर सीखने के साथ–साथ, कहीं भी व कभी भी सीखने के साथ–साथ, निरन्तर मूल्यांकन के साथ डिजीटल उपकरण तकनीकी, व्यवसायिक एवं जीवन कौशल के विकास में सहायक है।

चुनौतियाँ एवं समाधान –

चुनौतियाँ – डिजिटल डिवाइड, संसाधनों की कमी, डिजिटल साक्षरता का अभाव।

समाधान – सरकारी योजनाएँ, शिक्षक प्रशिक्षण, स्थानीय भाषा में सामग्री।

सारांश – सीखना एक सतत प्रक्रिया है। समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जिसमें सामान्य छात्र एवं अक्षम छात्र एक ही कक्षा में एक–दूसरे को सम्मिलित करके अध्ययन करते हैं। इसमें सामान्य व अक्षम छात्रों को एक साथ शिक्षण प्रदान करते हुए अधिगम स्तर से सम्बन्धित क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है। डिजिटल उपकरण समावेशी और सतत शिक्षा को प्रभावी, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण बनाते हैं। इनके समुचित उपयोग से ही ''सबके लिए शिक्षा, आजीवन अधिगम के लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल उपकरण समावेशी तथा सतत शिक्षा को सशक्त बनाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। भारत में छम्च् ;2020द्ध के संदर्भ में भी डिजिटल साधनों को शिक्षा की गुणवत्ता, निरन्तरता बढ़ाने का एक प्रभावी माध्यम माना गया है। सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना ही समावेशी शिक्षा का उद्देश्य है। वहीं सतत शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने व सीखने की प्रक्रिया है। डिजीटल युग में डिजिटल उपकरण इन दोनों प्रकार की शिक्षा को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सतत शिक्षा में डिजिटल उपकरण ''कभी भी, कहीं भी सीखने'' की सुविधा प्रदान करते हैं। ऑनलाईन पाठ्यक्रम, वेबिनार एवं ई–लर्निंग प्लेटफार्म शिक्षकों और शिक्षार्थियों के ज्ञान कौशल का विकास करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि डिजिटल उपकरण समावेशी एवं सतत शिक्षा को सुलभ, लचीला और गुणवत्तापूर्ण बनाकर शिक्षा के सार्वभौमिक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राजस्थान शिक्षण बोर्ड पत्रिका – मूल्यों की शिक्षा – जनरल एवं सर्वे ऑफ रिसर्च –
2. समावेशी विद्यालय का सृजन – डॉ. राजेन्द्र श्रीमाली
3. राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा. लि. – डॉ. रजनीश शर्मा
4. समावेशी शिक्षा : सिद्धान्त एवं व्यवहार – डॉ. रेखा शर्मा
5. डिजिटल शिक्षा और भारतीय परिप्रेक्ष्य – डॉ. सुनिता अग्रवाल
6. शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी प्रयोग – डॉ. अरूण कुमार
7. (6) डिजिटल एजुकेशन एक्शन प्लान – UNESCO